रविवार 10 अक्टूबर, 2021

विषय — क्या पाप, बीमारी और मृत्यु वास्तविक हैं?

स्वर्ण पाठ: नीतिवचन 22 : 6

"लड़के को शिक्षा उसी मार्ग की दे जिस में उस को चलना चाहिये, और वह बुढ़ापे में भी उस से न हटेगा।"

उत्तरदायी अध्ययन: भजन संहिता 78: 1-7

1 हे मेरे लोगों, मेरी शिक्षा सुनो; मेरे वचनों की ओर कान लगाओ!
2 मैं अपना मूंह नीतिवचन कहने के लिये खोलूंगा; मैं प्राचीन काल की गुप्त बातें कहूंगा,
3 जिन बातों को हम ने सुना, ओर जान लिया, और हमारे बाप दादों ने हम से वर्णन किया है।
4 उन्हे हम उनकी सन्तान से गुप्त न रखेंगें, परन्तु होनहार पीढ़ी के लोगों से, यहोवा का गुणानुवाद और उसकी सामर्थ और आश्चर्यकर्मों का वर्णन करेंगें॥
5 उसने तो याकूब में एक चितौनी ठहराई, और इस्त्राएल में एक व्यवस्था चलाई, जिसके विषय उसने हमारे पितरों को आज्ञा दी, कि तुम इन्हे अपने अपने लड़के बालों को बताना;
6 कि आने वाली पीढ़ी के लोग, अर्थात जो लड़के बाले उत्पन्न होने वाले हैं, वे इन्हे जानें; और अपने अपने लड़के बालों से इनका बखान करने में उद्यत हों, जिस से वे परमेश्वर का आसरा रखें,
7 और ईश्वर के बड़े कामों को भूल न जाएं, परन्तु उसकी आज्ञाओं का पालन करते रहें;

पाठ उपदेश

बाइबल

1. व्यवस्थाविवरण 6 : 1-3, 6-9

1 यह वह आज्ञा, और वे विधियां और नियम हैं जो तुम्हें सिखाने की तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने आज्ञा दी है, कि तुम उन्हें उस देश में मानो जिसके अधिकारी होने को पार जाने पर हो;
2 और तू और तेरा बेटा और तेरा पोता यहोवा का भय मानते हुए उसकी उन सब विधियों और आज्ञाओं पर, जो मैं तुझे सुनाता हूं, अपने जीवन भर चलते रहें, जिस से तू बहुत दिन तक बना रहे।
3 हे इस्राएल, सुन, और ऐसा ही करने की चौकसी कर; इसलिये कि तेरा भला हो, और तेरे पितरों के परमेश्वर यहोवा के वचन के अनुसार उस देश में जहां दूध और मधु की धाराएं बहती हैं तुम बहुत हो जाओ।
6 और ये आज्ञाएं जो मैं आज तुझ को सुनाता हूं वे तेरे मन में बनी रहें;

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

7 और तू इन्हें अपने बाल-बच्चों को समझाकर सिखाया करना, और घर में बैठे, मार्ग पर चलते, लेटते, उठते, इनकी चर्चा किया करना।
8 और इन्हें अपने हाथ पर चिन्हानी करके बान्धना, और ये तेरी आंखों के बीच टीके का काम दें।
9 और इन्हें अपने अपने घर के चौखट की बाजुओं और अपने फाटकों पर लिखना॥

2. मत्ती 4 : 23, 24

23 और यीशु सारे गलील में फिरता हुआ उन की सभाओं में उपदेश करता और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता, और लोगों की हर प्रकार की बीमारी और दुर्बल्ता को दूर करता रहा।
24 और सारे सूरिया में उसका यश फैल गया; और लोग सब बीमारों को, जो नाना प्रकार की बीमारियों और दुखों में जकड़े हुए थे, और जिन में दुष्टात्माएं थीं और मिर्गी वालों और झोले के मारे हुओं को उसके पास लाए और उस ने उन्हें चंगा किया।

3. मत्ती 18 : 2-6

2 इस पर उस ने एक बालक को पास बुलाकर उन के बीच में खड़ा किया।
3 और कहा, मैं तुम से सच कहता हूं, यदि तुम न फिरो और बालकों के समान न बनो, तो स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने नहीं पाओगे।
4 जो कोई अपने आप को इस बालक के समान छोटा करेगा, वह स्वर्ग के राज्य में बड़ा होगा।
5 और जो कोई मेरे नाम से एक ऐसे बालक को ग्रहण करता है वह मुझे ग्रहण करता है।
6 पर जो कोई इन छोटों में से जो मुझ पर विश्वास करते हैं एक को ठोकर खिलाए, उसके लिये भला होता, कि बड़ी चक्की का पाट उसके गले में लटकाया जाता, और वह गहिरे समुद्र में डुबाया जाता।

4. मत्ती 19 : 13-15

13 तब लोग बालकों को उसके पास लाए, कि वह उन पर हाथ रखे और प्रार्थना करे; पर चेलों ने उन्हें डांटा।
14 यीशु ने कहा, बालकों को मेरे पास आने दो: और उन्हें मना न करो, क्योंकि स्वर्ग का राज्य ऐसों ही का है।
15 और वह उन पर हाथ रखकर, वहां से चला गया।

5. लूका 7: 11-15

11 थोड़े दिन के बाद वह नाईंन नाम के एक नगर को गया, और उसके चेले, और बड़ी भीड़ उसके साथ जा रही थी।
12 जब वह नगर के फाटक के पास पहुंचा, तो देखो, लोग एक मुरदे को बाहर लिए जा रहे थे; जो अपनी मां का एकलौता पुत्र था, और वह विधवा थी: और नगर के बहुत से लोग उसके साथ थे।
13 उसे देख कर प्रभु को तरस आया, और उस से कहा; मत रो।

14 तब उस ने पास आकर, अर्थी को छुआ; और उठाने वाले ठहर गए, तब उस ने कहा; हे जवान, मैं तुझ से
कहता हूं, उठ।
15 तब वह मुरदा उठ बैठा, और बोलने लगा: और उस ने उसे उस की मां को सौप दिया।

6. प्रेरितों के काम 3: 1-9

1 पतरस और यूहन्ना तीसरे पहर प्रार्थना के समय मन्दिर में जा रहे थे।
2 और लोग एक जन्म के लंगड़े को ला रहे थे, जिस को वे प्रति दिन मन्दिर के उस द्वार पर जो सुन्दर
कहलाता है, बैठा देते थे, कि वह मन्दिर में जाने वालों से भीख मांगे।
3 जब उस ने पतरस और यूहन्ना को मन्दिर में जाते देखा, तो उन से भीख मांगी।
4 पतरस ने यूहन्ना के साथ उस की ओर ध्यान से देखकर कहा, हमारी ओर देख।
5 सो वह उन से कुछ पाने की आशा रखते हुए उन की ओर ताकने लगा।
6 तब पतरस ने कहा, चान्दी और सोना तो मेरे पास है नहीं; परन्तु जो मेरे पास है, वह तुझे देता हूं: यीशु
मसीह नासरी के नाम से चल फिर।
7 और उस ने उसका दाहिना हाथ पकड़ के उसे उठाया: और तुरन्त उसके पावों और टखनों में बल आ गया।
8 और वह उछलकर खड़ा हो गया, और चलने फिरने लगा और चलता; और कूदता, और परमेश्वर की स्तुति
करता हुआ उन के साथ मन्दिर में गया।
9 सब लोगों ने उसे चलते फिरते और परमेश्वर की स्तुति करते देखकर।

7. भजन संहिता 103: 1-4

1 हेमेरे मन, यहोवा को धन्य कह; और जो कुछ मुझ में है, वह उसके पवित्र नाम को धन्य कहे!
2 हे मेरे मन, यहोवा को धन्य कह, और उसके किसी उपकार को न भूलना।
3 वही तो तेरे सब अधर्म को क्षमा करता, और तेरे सब रोगों को चंगा करता है,
4 वही तो तेरे प्राण को नाश होने से बचा लेता है, और तेरे सिर पर करूणा और दया का मुकुट बान्धता है,

8. यशायाह 54 : 14, 15, 17

14 तू धामिर्कता के द्वारा स्थिर होगी; तू अन्धेर से बचेगी, क्योंकि तुझे डरना न पड़ेगा; और तू भयभीत होने से
बचेगी, क्योंकि भय का कारण तेरे पास न आएगा।
15 सुन, लोग भीड़ लगाएंगे, परन्तु मेरी ओर से नहीं; जितने तेरे विरुद्ध भीड़ लगाएंगे वे तेरे कारण गिरेंगे।
17 जितने हथियार तेरी हानि के लिये बनाए जाएं, उन में से कोई सफल न होगा, और, जितने लोग मुद्दई हो
कर तुझ पर नालिश करें उन सभों से तू जीत जाएगा। यहोवा के दासों का यही भाग होगा, और वे मेरे ही
कारण धर्मी ठहरेंगे, यहोवा की यही वाणी है॥

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 415 : 4-5

सत्य में पाप, बीमारी और मृत्यु की कोई नींव नहीं है।

2. 412 : 13-15

क्राइस्टियन साइंस और दिव्य प्रेम की शक्ति सर्वशक्तिमान है। यह वास्तव में पकड़ को नष्ट करने और बीमारी, पाप और मृत्यु को नष्ट करने के लिए पर्याप्त है।

3. 127 : 16-29

ईसाई विज्ञान ईश्वर को पाप, बीमारी और मृत्यु के लेखक के रूप में नहीं, बल्कि ईश्वरीय सिद्धांत के रूप में प्रकट करता है, सर्वोच्च व्यक्ति, मन, सभी बुराई से मुक्त। यह सिखाता है कि पदार्थ अस्तित्व का तथ्य नहीं, असत्य है; कि नसों, मस्तिष्क, पेट, फेफड़े, आदि में - पदार्थ के रूप में - कोई बुद्धि, जीवन या संवेदना नहीं है।

क्योंकि सभी सत्य दिव्य मन से आगे बढ़ते हैं इसलिए कोई भौतिक विज्ञान नहीं है। इसलिए सत्य मानव नहीं है, और यह सामग्री का नियम नहीं है, क्योंकि सामग्री कानून का दाता नहीं है। विज्ञान दिव्य मन का एक प्रतीक है, और केवल भगवान की व्याख्या करने में सक्षम है। इसकी एक आध्यात्मिक उत्पत्ति है और एक सामग्री नहीं है। यह एक दिव्य उच्चारण है, दिलासा देने वाला जो सभी सत्य का नेतृत्व करता है।

4. 234 : 25-26

प्रकट होने से पहले पाप और बीमारी के बारे में सोचा जाना चाहिए।

5. 236 : 12-20, 23-32

अपराध के पक्ष या विपक्ष में मां सबसे मजबूत शिक्षिका होती है। उसके विचार एक और नश्वर मन के भ्रूण का निर्माण करते हैं, और अनजाने में इसे खुद के प्रति घृणास्पद मॉडल के बाद या दैवीय प्रभाव के माध्यम से ढालते हैं, "इन सब वस्तुओं को उस नमूने के समान बनवाना, जो तुझे इस पर्वत पर दिखाया गया है॥" इसलिए ईसाई विज्ञान का महत्व, जिससे हम एक मन के बारे में सीखते हैं और अच्छाई की उपलब्धता हर दुख के उपाय के रूप में।

माता-पिता को चाहिए कि वे जल्द से जल्द अपने बच्चों को स्वास्थ्य और पवित्रता के सत्य सिखाएं। बच्चे वयस्कों की तुलना में अधिक व्यवहार करने योग्य होते हैं, और वे सरल सत्यों से प्यार करना अधिक आसानी से सीखते हैं जो उन्हें खुश और अच्छा बना देगा।

यीशु छोटे बच्चों को गलत से आज़ादी और सही के प्रति ग्रहणशीलता के कारण प्यार करते थे। जबकि उम्र दो मतों के बीच रुक रही है या झूठी मान्यताओं से जूझ रही है, युवा सत्य की ओर आसान और तेजी से कदम बढ़ाता है।

6. 237 : 1-32

एक छोटी लड़की, जो कभी-कभार मेरी बातें सुनती थी, ने अपनी उंगली को बुरी तरह जख्मी कर लिया। ऐसा लग रहा था कि उसने इसे नोटिस नहीं किया। इसके बारे में पूछे जाने पर उसने सरलता से उत्तर दिया, "सामग्री में कोई सनसनी नहीं है।" हंसती निगाहों से बंधते हुए, उसने वर्तमान में कहा, "मम्मा, मेरी उंगली थोड़ी खराब नहीं है।"

हो सकता है कि उसके माता-पिता ने अपनी नशीली दवाओं को छोड़ दिया होगा, या उनकी छोटी बेटी ने इतनी स्वाभाविक रूप से प्राप्त मानसिक ऊंचाई तक पहुंचने में महीनों या वर्षों का समय लगाया होगा। माता-पिता के अधिक जिद्दी विश्वास और सिद्धांत अक्सर उनके और उनकी संतानों के मन में अच्छे बीज को दबा देते हैं। अंधविश्वास, "हवा के पक्षियों" की तरह, अच्छे बीज को अंकुरित होने से पहले ही छीन लेता है।

बच्चों को उनके पहले पाठों में से सत्य-उपचार, ईसाई विज्ञान पढ़ाया जाना चाहिए, और बीमारी के बारे में सिद्धांतों या विचारों पर चर्चा या मनोरंजन से दूर रहना चाहिए। त्रुटि के अनुभव और उसके कष्टों को रोकने के लिए, अपने बच्चों के मन से पापी या रोगग्रस्त विचारों को दूर रखें। उत्तरार्द्ध को पूर्व के समान सिद्धांत पर बाहर रखा जाना चाहिए। यह ईसाई विज्ञान को जल्दी उपलब्ध कराता है।

कुछ इनवैलिड्स तथ्यों को जानने या मामले की भ्रांति और इसके कथित कानूनों के बारे में सुनने के लिए तैयार नहीं हैं। वे अपने भौतिक देवताओं के लिए थोड़ा अधिक समय समर्पित करते हैं, जीवन और पदार्थ की बुद्धि में विश्वास से चिपके रहते हैं, और यह अपेक्षा करते हैं कि यह त्रुटि उनके लिए और अधिक करेगी, जो वे एकमात्र जीवित और सच्चे ईश्वर को स्वीकार करने के लिए तैयार हैं। आपके स्पष्टीकरण पर अधीर, मन के विज्ञान की जांच करने के लिए अनिच्छुक, जो उन्हें उनकी शिकायतों से छुटकारा दिलाएगा, वे झूठे विश्वासों को गले लगाते हैं और भ्रामक परिणाम भुगतते हैं।

7. 273 : 10-28

क्योंकि सभी सत्य दिव्य मन से आगे बढ़ते हैं इसलिए कोई भौतिक विज्ञान नहीं है। इसलिए सत्य मानव नहीं है, और यह सामग्री का नियम नहीं है, क्योंकि सामग्री कानून का दाता नहीं है। विज्ञान दिव्य मन का एक प्रतीक है, और केवल भगवान की व्याख्या करने में सक्षम है। इसकी एक आध्यात्मिक उत्पत्ति है और एक सामग्री नहीं है। यह एक दिव्य उच्चारण है, दिलासा देने वाला जो सभी सत्य का नेतृत्व करता है।

सामग्री और चिकित्सा विज्ञान के तथाकथित कानूनों ने नश्वर को कभी भी पूर्ण, सामंजस्यपूर्ण और अमर नहीं बनाया है। आत्मा द्वारा शासित होने पर मनुष्य सामंजस्यपूर्ण होता है। इसलिए होने के सत्य को समझने का महत्व, जो आध्यात्मिक अस्तित्व के नियमों को प्रकट करता है।

भगवान ने आध्यात्मिक कानून को रद्द करने के लिए कभी भी एक भौतिक कानून का पालन नहीं किया। यदि ऐसा कोई भौतिक कानून होता, यह आत्मा, परमेश्वर की सर्वोच्चता के खिलाफ होगा, और यह निर्माता के ज्ञान को प्रभावित करेगा। यीशु लहरों पर चले गए, भीड़ को खिलाया, बीमारों को चंगा किया और भौतिक कानूनों के विरोध में मृतकों को उठाया। उनके कार्यों में विज्ञान का प्रदर्शन था, भौतिक बोध या कानून के झूठे दावों पर काबू पाने से।

8. 380 : 28-31

यह मानने से अधिक निराशाजनक कुछ भी नहीं है कि ईश्वर के विपरीत एक शक्ति है, या अच्छा है, और यह कि ईश्वर इस विरोध शक्ति का उपयोग स्वयं के खिलाफ, जीवन, स्वास्थ्य, सद्भाव के खिलाफ करने की शक्ति के साथ करता है।

9. 184 : 3-5

सत्य बीमारी, पाप और मृत्यु को विनियमित करने के लिए कोई कानून नहीं बनाता है, क्योंकि ये सत्य के लिए अज्ञात हैं और इन्हें वास्तविकता के रूप में मान्यता नहीं दी जानी चाहिए।

10. 402 : 8-13

वह समय निकट आता है जब नश्वर मन अपने भौतिक, संरचनात्मक और भौतिक आधार को त्याग देगा, जब विज्ञान में अमर मन और उसके गठन को पकड़ लिया जाएगा, और भौतिक विश्वास आध्यात्मिक तथ्यों में हस्तक्षेप नहीं करेंगे। मनुष्य अविनाशी और शाश्वत है।

11. 598 : 23-30

दिव्य चेतना का एक क्षण, या जीवन और प्रेम की आध्यात्मिक समझ, अनंत काल का पूर्वाभास है। जब अस्तित्व के विज्ञान को समझा जाता है, तो प्राप्त और बनाए रखा गया यह श्रेष्ठ दृष्टिकोण, आध्यात्मिक रूप से मृत्यु के अंतराल को जीवन के साथ पाट देगा, और मनुष्य अपनी अमरता और शाश्वत सद्भाव की पूर्ण चेतना में होगा, जहां पाप, बीमारी और मृत्यु हैं। अनजान।

12. 201 : 1-3

सबसे अच्छा उपदेश जो सत्य का उपदेश है, वह पाप, बीमारी और मृत्यु के विनाश द्वारा प्रचलित और प्रदर्शित किया जाने वाला सत्य है।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6